33. सफलता की कुंजी : मन की एकाग्रता

संकेत बिंदु-
- मन की एकाग्रता क्या और क्यों
- सफलता की कुंजी
- सतत अभ्यास

चिंतन करना मनुष्य की पहचान है। इस चिंतन का संबंध मनन से है, जो मन की शक्ति के रूप में निहित होता है। मन के जुड़ने से अत्यधिक असंभव से लगने वाले कार्य भी सरलता से संपन्न हो जाते हैं और मन के टूटने से बड़े-बड़े संकल्प भी धराशायी हो जाते हैं। संकल्प शक्ति वह अचूक हथियार है, जिससे विशाल सशस्त्र सेना को भी आसानी से पराजित किया जा सकता है। संकल्प शक्ति इतनी शक्तिशाली एवं प्रभावपूर्ण होती है कि सामने वाला अपने सभी अस्त्र-शस्त्र लिए हुए निरुतर रह जाता है। यह कोई बाह्य वस्तु नही, बल्कि मनुष्य की आंतरिक शक्ति है। मनुष्य की इस आंतरिक शक्ति से मानव समाज तो क्या स्वयं देव समाज भी घबराता है।

हमारे सामने ऐसे अनेक उदाहरण हैं, जब मन में दृढ़ संकल्प एवं उत्साह रखने वाले व्यक्तियों ने दुनिया में ऐसे असंभव कार्यों को संभव कर दिया है, जो कल्पनाओं से भी परे हैं। चाहे वह सावित्री द्वारा अपने पति सत्यवान का जीवन यमराज से लौटाना हो या फिर नचिकेता द्वारा मृत्यु को पराजित कर इच्छानुसार वरदान प्राप्त करना। चाहे महाराणा प्रताप द्वारा महान् मुगल शासक अकबर से टक्कर लेना हो या फिर शिवाजी द्वारा शक्तिशाली औरंगजेब के दाँत खट्टे करना। शारीरिक रूप से अत्यधिक कमजोर गाँधी जी द्वारा ब्रिटिश साम्राज्य की नींव हिलाना हो या फिर परमाणु बम से तबाह जापान द्वारा विश्व के अग्रणी शक्ति संपन्न देशों की श्रेणी में शामिल हो जाना।

उपरोक्त सभी उदाहरण इस तथ्य की पुष्टि करते हैं कि अत्यंत विषम परिस्थितियों में भी किसी ने भी तत्कालीन मिली असफलता को मन से स्वीकार नहीं किया और निरंतर लक्ष्य प्राप्ति के अपने प्रयास में लग रहे और अंततः उन्हें सफलता प्राप्त हुई और वे इतिहास में अमर हो गए।

असफलताएँ जीवन प्रक्रिया का एक स्वाभाविक अंग हाती है। दुनिया का कोई भी ऐसा व्यक्ति नहीं हो सकता, जिसने असफलता का स्वाद न चखा हो, लेकिन महान सिर्फ़ वही व्यक्ति बनते हैं, जो अपनी असफलताओं को सफलता प्राप्त करने की प्रक्रिया का एक अनिवार्य हिस्सा बना लेते हैं। असफलताओं से घबराए बिना वे तब तक अपनी लक्ष्य प्राप्ति के लिए ईमानदारी पूर्वक प्रयत्न करते रहते हैं, जब तक वास्तव में सफलता मिल नहीं जाती।

वे ईमानदारी सर्मथ प्रयत्न इसलिए करते रहते हैं, क्योंकि उन्हें अपनी क्षमताओं पर विश्वास होता है। वे कभी भी मन से हार नहीं मानते। इसी का नतीजा एक दिन उनकी सफलता के रूप में सामने आता है। ऐसे व्यक्ति ही महान कार्यों को संपादित करते है और विश्व प्रसिद्ध होते हैं। दूसरी ओर अधिकांश व्यक्ति अपनी असफलताओं से घबराकर निराश हो जाते हैं। उन्हें अपनी क्षमताओं पर विश्वास नहीं रहता और वे मन से हार को स्वीकार कर लेते हैं। ऐसा व्यक्ति उत्साह रहित एवं दुविधाग्रस्त हो जाता है। किसी भी कर्म को करने से हिचकिचाता है। उसे हमेशा यही आशंका रहती है कि वह अपने कर्म में सफल नहीं होगा, क्योंकि उसने मन से अपनी हार स्वीकार कर ली होती है।

Scanned with CamScanner